प्रेस विज्ञप्ति
तत्काल प्रकाशनार्थ

बोन मैरो प्रत्यारोपण (बीएमटी): मल्टीपल स्केलेरॉसिस का वैकल्पिक उपचार

फोर्टिस हेल्थकेयर ने 24 वर्षीय युवती को मल्टीपल स्केलेरॉसिस से मुकाबला करने योग्य बनाने के लिए बीएमटी का सहारा लिया

नई दिल्ली, 20 अप्रैल, 2017: 24 वर्षीय कनिका जुनेजा को हाल ही में फोर्टिस हेल्थकेयर की टीम की मदद से दूसरा जीवन मिला है। कनिका अपने दांए हाथ में संवेदनशीलता खत्म हो जाने की वजह से एक ऐसी परिस्थिति का सामना कर रही थी जिससे वह बेहद परेशान और स्तब्ध थी। कुछ सप्ताह के भीतर ही उसकी स्थिति धीरे–धीरे खराब होने लगी और 8 अक्टूबर, 2014 को उन्हें एम्स में भर्ती कराया गया जहां उन्हें मल्टीपल स्केलेरॉसिस से पीड़ित बताया गया जो प्रतिरोधक क्षमता से संबंधित बीमारी है। इस विकार में शरीर की प्रतिरोधक प्रणाली मस्तिष्क और मेरु–रज्जु में मौजूद तंत्रिका कोशिकाओं को ढकने वाले सुरक्षा कवच पर हमला करना शुरू कर देती है। इस बीमारी ने कई हमलों के रूप में अपना असर छोड़ना शुरू कर दिया था और इनमें से प्रत्येक विकलांगता के लक्षण छोड़ देती है। इससे यह भी पता चलता है कि उसकी स्थिति बहुत ही खतरनाक थी और लगातार खराब हो रही थी।

इस स्थिति को नियंत्रित करने के लिए कनिका को महंगे स्टेरॉयड इंजेक्शन लेने पड़े जिससे सिर्फ उसकी जलन कम हो सकती थी लेकिन यह कोई इलाज नहीं था।

महंगे उपचार के कई चरणों से गुजरने के बाद उसके परिवार ने बोन मैरो ट्रांसप्लांट (बीएमटी) के क्षेत्र में डॉ. राहुल भार्गव, निदेशक, क्लिनिकल हेमेटोलॉजी और बोन मैरो ट्रांसप्लांट, एफएमआरआई की टीम द्वारा नवोन्मेषी तरीकों के बारे में जानने के बाद उनसे

संपर्क किया। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि बीएमटी सर्जरी उनकी परेशानियों का जवाब हो सकती है।

कनिका कुछ साल पहले सुर्खियों में आए अनमोल जुनेजा की बहन है जो भारत में अंगदान का प्रमुख चेहरा बन चुके हैं। 21 वर्षीय अनमोल जुनेजा को 2012 में मृत घोषित किए जाने के बाद उनके परिवार ने 34 लोगों का जीवन बचाने के लिए भारत में पहली बार स्वयं अंगदान करने का निर्णय किया था। जुनेजा के चले जाने के बाद उनके परिवार ने इस अपूरणीय क्षति को किसी प्रकार अपने भीतर जज़्ब कर लिया और जीवन चलता रहा। लेकिन कनिका के मल्टीपल स्केलेरॉसिस (एमएस) का पता लगने के साथ ही उनके परिवार पर एक बार फिर दुःख का साया मंडराने लगा। कनिका ने बताया, *''जब मुझे मल्टीपल स्केलेरॉसिस का पता चला तब मैंने सिर्फ अपने कॉलेज की पढ़ाई ही पूरी की थी। मैं भाग्यशाली थी क्योंकि लक्षण दिखाई देने के एक सप्ताह के भीतर मुझे मेरी बीमारी का पता चल गया था इसलिए मैं तेजी से विभिन्न उपचारों का लाभ उठा सकी। मैंने बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मल्टीपल स्केलेरॉसिस फेसबुक कम्युनिटी की शुरूआत की और विभिन्न प्रकार के उपचार के विकल्पों को तलाशा। पारंपरिक स्टेरॉयड इंजेक्शंस और इम्युन थेरेपी अत्यधिक महंगे विकल्प हैं और ये उपचार सुधार का वादा नहीं करते हैं। इसलिए मैंने बोन मैरो ट्रांसप्लांट कराने का निर्णय लिया जिसके माध्यम से इस बात की संभावना थी कि शरीर कुछ हद तक काम करना शुरू कर दे।''*

डॉ. राहुल भार्गव ने कहा, *''मल्टीपल स्केलेरॉसिस का कारण अब भी एक पहेली बना हुआ है। क्लिनिकल प्रक्रियाएं सिर्फ बीमारी के बढ़ने की दर को कम करती हैं और निश्चित उपचार का इसमें कोई भरोसा नहीं है। ऑटोलॉगस बीएमटी प्रक्रिया में मरीज की स्वस्थ्य स्टेम कोशिकाओं को निकालकर सुरक्षित रखा जाता है। इसके बाद शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को नया आधार देने के लिए कीमोथेरेपी की जाती है और इसके बाद कीमोथेरेपी के नुकसान से मरीज को बचाने के लिए स्टेम कोशिकाओं को दोबारा शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है। सर्जरी के बाद मरीज को कुछ महीनों के लिए अलग रखा जाता है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें किसी प्रकार का संक्रमण न हो। कनिका के स्वास्थ्य में अब*

तेजी से सुधार हो रहा है और वह कई एमएस मरीजों के लिए एक शानदार उदाहरण होंगी।''

कनिका अब सोशल मीडिया के माध्यम से समुदाय के बीच एमएस के बारे में जागरूकता बढ़ाने के काम में सक्रियतापूर्वक लगी हुई हैं।

डॉ. सिमरदीप सिंह गिल, जोनल निदेशक, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट ने कहा, *''फोर्टिस हेल्थकेयर ने पिछले कुछ वर्षों में कई जटिल सर्जरियों की शुरूआत की है। इस मामले में हमने साबित किया कि बोन मैरो ट्रांसप्लांट को मल्टीपल स्केलेरॉसिस मरीजों के लिए एक सफल वैकल्पिक उपचार के तौर पर देखा जा सकता है जिससे उन्हें नया जीवन मिल सकता है। एफएमआरआई एक व्यापक और एकीकृत क्लिनिकल हेमोटोलॉजी और बोन मैरो ट्रांसप्लांट प्रोग्राम की पेशकश करता है जिसमें कई वर्षों का अनुभव रखने वाले विशेषज्ञ शामिल हैं। उन्होंने हाल ही में अपना 100वां बीएमटी सफलतापूर्वक पूरा किया है।''*

फिलहाल दुनिया भर में करीब 23 लाख मरीज़ मल्टीपल स्केलेरॉसिस से पीड़ित हैं।[1] यह एक ऑटोइम्युन बीमारी है जिसका न तो कोई कारण मालूम पड़ा है और न ही इसका कोई इलाज है। 20 से 50 वर्ष की उम्र में होने वाली यह बीमारी एक ऐसी दशा है जिसमें शरीर की प्रतिरोधक प्रणाली मस्तिष्क और मेरु–रज्जु की नसों पर हमला करना शुरू कर देती है और ऊतकों की परतों का नुकसान पहुंचाती है जिसे मायलिन के तौर पर जाना जाता है। इसके परिणामस्वरूप दिमाग के काम करने की गति मंद पड़ने लगती है। मल्टीपल स्केलेरॉसिस में चार प्रकार के मामले देखने को मिलते हैं जिनमें सबसे सामान्य प्रकार रिलैप्स–रेमिटिंग एमएस है। प्राइमरी प्रोग्रेसिव एमएस एक ऐसी दशा है जो सिर्फ 10 फीसदी आबादी को ही प्रभावित करती है और प्रोग्रेसिव रिलैप्सिंग एमएस में बीमारी काफी हद तक आगे बढ़ जाती है और इसके आगे कोई उम्मीद बाकी नहीं रहती है। सेकेंडरी प्रोग्रेसिव एमएस में बीमारी के लक्षण समय के साथ बिगड़ते जाते हैं।

फोर्टिस हैल्थकेयर लिमिटेड के बारे में
फोर्टिस हैल्थकेयर लिमिटेड भारत में अग्रणी एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रदाता है। कंपनी की स्वास्थ्य सेवाओं में अस्पतालों के अलावा डायग्नॉस्टिक एवं डे केयर स्पेश्यलिटी सेवाएं शामिल हैं। फिलहाल कंपनी भारत समेत दुबई, मॉरीशस और श्रीलंका में 45 हैल्थकेयर

सुविधाओं (इनमें वे परियोजनाएं भी शामिल हैं जिन पर फिलहाल काम चल रहा है), करीब 10,000 संभावित बिस्तरों और 346 डायग्नॉस्टिक केंद्रों का संचालन कर रही है।

For more information, please contact:

Fortis Healthcare Ltd	Avian Media
Tanushree Roy Chowdhury: +91 9999425750 tanushree.chowdhury@fortishealthcare.com	**Rishu Singh, +91-9958891501** rishu@avian-media.com **Preeti Sehrawat: +91- 9711170599** preeti@avian-media.com
Fortis Healthcare Ltd. **National Media Head:** **Ajey Maharaj: +919871798573** ajey.maharaj@fortishealthcare.com	